बच्चों की औपचारिक शिक्षा के लिए अनिवार्य है कि वे स्कूल में नामांकित हों और नियमित आयें। बच्चों के दिमाग में स्कूल की बना दी गई छवि इसे प्रभावित करती है। शिक्षक की प्रतिबद्धता एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार से बच्चे को शाला में जोड़ने का एक उदाहरण है यह डायरी।

डायरी

शबाना स्कूल आयी

❑ दिलीप चुघ

इब्तिदा एक स्वयंसेवी संस्था है। जो पिछले 4 वर्षों से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के स्वयं सहायता समूह बनाने तथा गुणवत्तापूर्ण वैकल्पिक शिक्षा प्रदान करने का कार्य कर रही है। यह कार्य उमरैण, रामगढ तथा अलवर तहसीलों में चल रहा है। अलवर से औसतन 8 किमी. दूरी पर विभिन्न गांवों, बासों तथा बस्तियों में समूह चल रहे हैं। जुलाई माह में 'सक्का बस्ती' में नया स्कूल खोला है। बच्चों ने इसका नाम 'चन्दा' रखा है जो कि एक कविता 'चन्दा के गांव में' से चुना है। आरंभ से ही मैं इस समूह को संभाल रहा हूं।

29 जुलाई, 2004

आज सोचकर गया था कि शबाना को समूह में लाना है। जब से उसके पिता ने नाम लिखवाया वह अनुपस्थित रही है। उसके पिता से बात करने पर उसने बताया कि वह उसे स्कूल भेजना चाहता है लेकिन वह जाने से मना करती है। बहुत मारा पीटा भी लेकिन नहीं मानती। मैं आज लंच के समय उसके घर गया। बेहद मासूम और दबी सकुचाई-सी शबाना। उसकी उम्र लगभग 8 वर्ष है। मैंने उसकी माँ से उसके स्कूल जाने की पृष्ठभूमि जाननी चाही तो उसने बताया कि जहां पहले रहा करते थे वहां गांव में सरकारी स्कूल में जाती थी लेकिन वहां किसी बच्चे से लड़ाई होने एवं शिक्षकों के डर से आज तक स्कूल नहीं गई है।

मैंने शबाना से पूछा कि स्कूल क्यों नहीं जाना चाहती हो तो वह कुछ नहीं बोली। उसकी मां ने दिलासा दिलाई कि यह मारता नहीं है खिलाता भी है और प्यार से पढ़ाता है। वह फिर भी चुप ही रही । मैंने स्कूल की बातें छोड़ीं और उसके हाथ में वह मुर्गी का अण्डा देने का प्रयास किया जिसकी आज उसकी मां सब्जी बनाने वाली थी। लेकिन उसने नहीं लिया। मैंने उससे और भी बातें पूछी और कहीं लेकिन उसने अपने सिर को हर बात पर दायें से बायें और बायें से दायें हिला दिया। उसकी मां का गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था। आखिरकार उसने उसे जबरदस्ती नहलाना शुरू किया।

शबाना के प्रतिरोध करने पर तीन-चार थप्पड़ भी जड़ दिये। उसकी मां को रोकने के मेरे प्रयास विफल रहे। मैं घर से बाहर आ गया। उसके रोने की आवाज आती रही। लंच खत्म हुआ घण्टी बजी। सामने देखा तो शबाना की मां उसे जबरदस्ती हाथ में डण्डी लिये समूह की ओर घसीटती ला रही थी और वह रो रही थी। पास आने पर और जोर से रोने लगी। उसकी मां उसे वहीं दरवाजे पर छोड़कर चली गई। कुछ ही मिनटों में वापस लौटी और कहने लगी कि मैं लकड़ी लाने जा रही हूं, नहीं पढ़ी तो बहुत मारूंगी। इस समय तक मेरे अन्दर का मानस मुझे कोसने लगा कि आज तेरे कारण ही इस बालिका को पिटना भी पड़ रहा है।

खैर ! मैंने उसे अन्दर बैठने को कहा लेकिन वह टस से मस नहीं हुई। मैं अन्दर गया और जल्दी ही सभी को काम समझाकर वापस लौटा वह दरवाजे पर ही खड़ी थी। मैंने उससे पूछा, गेंद खेलना है ? उसने अपना सिर उसी नकारात्मक मुद्रा में हिलाया। इसी तरह से और भी प्रश्न किये रस्सा कूदना है ? तुम्हारे हाथ में कितनी चूड़ियां हैं ? तुम्हारे घर पर वह पेड़ किसका है जिस पर झूला डाल रखा है ? अब भी उसके उत्तर मौन नकारात्मक ही रहे। मैंने पूछा अन्दर गर्मी लगती है ? उसने सकारात्मक रूप से सिर हिलाया। मैं झट से हार्ड बोर्ड, पेन्सिल, वर्कशीट, कटर, रबड़ लाया और उसे देने की कोशिश की और कहा कि चलो कीकर के नीचे बैठकर लिखते हैं। उसने फिर मना कर दिया। मैंने कहा ये कटर लो, पेन्सिल छीलो। उसने फिर मना कर दिया। मैं बेहद परेशान सा होने लगा। हालांकि वह अब तक चुप हो चुकी थी। मुझे अन्दर बच्चों के पास भी जाना पड़ रहा था। उप समूह एक का मौखिक कार्य खत्म हुआ तो लिखित कार्य की बारी आई। इस पर मनीषा ने पूछा कि आज पेन्सिल कौन बांटेगा ? मैं रेखा का नाम लेने ही वाला था कि एक विचार कौंधा और बाहर आकर पेन्सिलों का तसला (छोटी परात) शबाना को दिया और कहा कि आज तुम सभी को एक-एक पेन्सिल बांट दो। आश्चर्य ! मैं सफल हुआ। उसने धीरे से अपनी चप्पल खोली और अन्दर आकर गोल घेरे में सभी को पेन्सिल बांट दी। मैंने जब सभी को वर्कशीट बांटी तो उसे भी दी। उसने ली और पेन्सिल भी पकड़ी। लेकिन मैं जैसे ही उसके पास जाकर उसे समझाने लगता उसके पूरे शरीर में अजीब सी कंपकपी छूटती और पेन्सिल भी फिसल जाती। उसके चेहरे पर बस

यही भाव आते, ''मुझे मारना मत, मुझसे काम नहीं होता'' जैसे सीखने-सिखाने की दुनिया में उसका कोई अस्तित्व ही न हो। आखिरकार वह पन्नों पर आडी-तिरछी रेखाएं ही बना पाई। छुट्टी के समय मैंने अपना बनाया हुआ एक हवाई जहाज उसे दिया। उसने लिया और वह हल्का-सा मुस्कुराई। एक मासूम बचपन पर स्कूल का ऐसा खौफ पहली बार मैंने देखा था। मैं कह सकता हूं, स्कूल के प्रति उसकी अवधारणा किसी डरावनी जगह जैसी बन चुकी थी।

3 अगस्त, 2004

आज मैं इंतजार में था कि शबाना आयेगी। क्योंकि स्कूल की दो दिन की छुट्टी के पश्चात् तीसरे दिन वह फिर से अनुपस्थित रही। कल उसके पिता से बात करने पर काफी सकारात्मक जवाब मिला। उन्होंने कहा कि अब वह जरूर आयेगी। भाषा के कालांश में उसकी मां उसे छोटी बहन के साथ समूह में छोड़ने आई। छोटी बहन तो अन्दर आ गई लेकिन शबाना बाहर ही खड़ी रही। मैनें उसकी मां को जाने के लिए कहा और शबाना से अन्दर न आने का कारण पूछा। वह मौन खड़ी रही। अन्दर सभी अपना-अपना काम कर रहे थे। मैंने आज पुन: उसे पेन्सिल बांटने को कहा, लेकिन उसने मना कर दिया। मैंने आबिदा से कहा कि इसे अन्दर बुला लो। शबाना आबिदा की भांजी लगती है और वे साथ खेलती हैं लेकिन वह भी उसे अन्दर न बुला सकी। मुझे फिर से बेहद उलझन होने लगी। अब तक भाषा का कालांश खत्म हो चुका था। सभी बच्चे पानी पीने बाहर आ चुके थे। इस समय शबाना व उसकी छोटी बहन घर वापस लौट गई। मैं लंच में उसके घर गया। मुझे देखते ही दोनों अपनी मां के पास बैठ गई। उस समय उनके पिता भी वहीं थे। मैंने उसकी मां से पूछा कि शबाना घर पर सारे काम करती है, कहना मानती है, तो उसकी मां ने बताया कि नहीं, लड़-पीट कर करवाना पड़ता है। मेरे यह पूछने पर कि शबाना किसी बात से डरती है, उसकी मां ने बताया कि वह अन्दर कमरे मे बैठने से डरती है। कमरे में सोने पर वह कभी भी दरवाजा बन्द नहीं करने देती है तथा मच्छर दानी में भी नहीं सोती है। कहती है कि तुम मुझे बन्द कर दोगे। पहले जहां रहते थे वहां भी वह बाहर सोती थी, अपनी दादी के पास। दरवाजा बन्द करने पर उसे डर लगता है। आज उसके पिता ने शबाना को समझाया कि लंच बाद चली जाना, चाहे कन्चे ही खेले लेना। आखिर में उसने शबाना व उसकी छोटी बहन को पांच रुपये भी दिये। स्कूल जाने का लालच लेकिन बच्चों के सामने मैं कुछ नहीं कह सका। लंच के बाद दोनों बहने आईं। मैंने बाहर एक पट्टी निकाली और आबिदा को उनके साथ बैठा दिया। वर्कशीट देने पर ली तो सही लेकिन काम करने से मना कर दिया। इसका कोई कारण वह नहीं बता पाई लेकिन उसके चेहरे पर यही भाव थे, मुझसे नहीं होगा, मैं कुछ नहीं जानती।

अन्दर सभी को काम समझाने के बाद लौटा तो आकृति मिलान की वर्कशीट पर उसे समझाने लगा कि ऐसा इस लाइन में कहां बना है ? उसके नहीं बताने पर मैंने उसे बताया और पेन्सिल से मिला दिया। अब उसके हाथ में पेंसिल दी और आगे ऐसे ही करने को कहा। उसने मना कर दिया। मैंने उसका हाथ पकड़ कर पेन्सिल चलाने की कोशिश की तो उसके हाथ से पेंसिल छूट गई। जैसे वह पेंसिल पकड़ना ही नहीं जानती हो। मैंने कहा चलो ठीक है, जैसा करना है करो, यह कहकर मैं अन्दर आकर बच्चों का काम देखने लगा। 10 मिनट बाद बाहर आया तो शबाना कुछ आकृतियों को ठीक प्रकार से मिला चुकी थी। मैंने इसकी प्रशंसा की और आगे ऐसे ही करने को कहा। मैं वहीं बैठा रहा और देखते ही देखते उसने पूरा काम ठीक किया। इसके बाद कला के कालांश में मैंने उसे अन्दर बैठने को कहा और इसका कारण भी समझाया कि सभी का एक साथ बैठना जरूरी है। वह चुपचाप अन्दर चली आई। मैंने आज बटुआ बनाना सिखाया। ज्यादातर मैंने उसकी सहायता की लेकिन उसे इस विश्वास में रखा कि वह स्वयं सीख चुकी है। छुट्टी के बाद वह वहीं रुकी। उसने पेंसिलें छीलीं तथा सामान को जमवाया।

5 अगस्त, 2004

आज शबाना सुबह से ही समूह में उपस्थित थी। उसने कविताओं में न तो हावभाव किये न ही कुछ बोली। लेकिन और बच्चों को मजे से हाव-भाव करते देखना उसे विस्मय सहित खुशी दे रहा था। मैंने इशारों में उसे हाव-भाव करने को प्रेरित किया। लेकिन पता नहीं कौनसी झिझक या डर उसे दबा रहा था। भाषा में हुए लिखित व मौखिक कार्यों में उसकी सहभागिता ठीक रही। अंग्रेजी में वह कार्य ठीक प्रकार नहीं कर पाई, फिर भी उसके प्रयास की मैंने प्रंशसा की। मैं नोट कर रहा था कि अब वह समूह में थोड़ा हंसने व मुस्कुराने लगी है।

9 अगस्त, 2004

आज शबाना अनुपस्थित रही। उसके घर गया तो पता चला कि उसकी मां, छोटी बहन, भाई सभी को बुखार है। उसकी मां ने जाते ही कहा कि आज तो ये जाने की कह रही थी लेकिन मैंने ही घर के कामों के कारण रोक लिया।

12 अगस्त, 2004

आज शबाना तीन दिन की छुट्टी के बाद पुन: उपस्थित हुई। सभा में न तो कविताओं का अनुसरण किया और न ही हावभाव किये। मुझे कुछ चिन्ता हुई। भाषा में काम ठीक रहा। अंग्रेजी व पर्यावरण में सहभागिता कम रही। गणित के मौखिक कार्य में आज ताली गिनने का कार्य करवाया, सामूहिक ताली बजाने पर उसने भी ताली बजाई। यहीं से उसके हाथ हाव-भाव करने लगे। इसके बाद कविता एक-एक-एक नाक हमारी एक पर उसने बढ़िया हाव-भाव किये व गाया भी। कला में 15 अगस्त की तैयारी में हुई कविताओं में भी अच्छी सहभागिता रही। धीरे-धीरे वह ठीक दिशा में बढ़ने लगी है। ◆